RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-01
January -2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

भीष्म साहनी का जीवन और साहित्य

योगेश कुमार सिंह

शोधार्थी अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की जनचेतना ने भीष्म साहनी की दृष्टि को यथार्थवादी दृष्टिकोण के रूप में रूपायित किया। उनके रचना संसार में सामंतवादी-पूंजीवादी व्यवस्था, वर्णवादी व्यवस्था, वर्गवादी व्यवस्था के आंतरिक अंतर्विरोधों का खुला चित्रण सामने आया। भीष्म साहनी ने अपने रचनाओं में निम्न एवं मध्यवर्ग का चित्र वैसा ही प्रस्तुत किया, जैसा कि प्रेमचंद ने किया था। डॉ॰ वेदप्रकाश अमिताभ ने स्पष्ट किया है कि - "भीष्म साहनी की मानसिकता प्रारंभ से ही समाजदर्शी और यथार्थपरक रही। वे निश्चय ही प्रेमचंद की परंपरा के कथाकार हैं।"[1]यानी अपनी सृजनशीलता को समाजदर्शी बनाते हुए भीष्म साहनी ने जन-मन को वाणी देने की परंपरा को आगे बढ़ाया।

भीष्म साहनी के व्यक्तित्व के कई ऐसे पक्ष रहे जिन्हें केवल उनके अतरंग मित्रों ने ही पहचाना और जाना। आज ऐसे साहित्यकार गिने-चुने ही रह गए हैं जो उनके इन रूपों से परिचित हों। जैसे कि बहुत थोड़े से लोग उनके हसोड़ और विनोदी स्वरूप के जानकार हैं। भीष्म साहनी हिन्दी के बहुत ही महत्वपूर्ण रचनाकार हैं, जिन्होंने लगभग 50 वर्षों तक हिन्दी साहित्य की सेवा की। भीष्म साहनी ने विभाजन की त्रासदी को झेला और इसी के प्रतिपक्ष्य में मानवीय मूल्यों की स्थापना की तथा साथ ही इसके विरुद्ध काम भी किया। साहनी जीवन भर राजनीतिक संकीर्णताओं, सांप्रदायिक उन्मादों से जूझते रहे और इसी उन्माद ने उनके व्यक्तित्व-कृतित्व को गढ़ा। भीष्म साहनी के यहां सांप्रदायिकता मात्र दो भिन्न संप्रदायों के मध्य का मनमुटाव या भिन्नता के रूप में नहीं उभरी बल्कि धार्मिक, सांस्कृतिक और भाषिक स्तर पर एक दूसरे को विलगाकर भारतीय साझा संस्कृति की विरासत को खोखला करने वाली एक दीमक के रूप में सामने आयी। भीष्म साहनी के नाटक, उपन्यास, कहानी, उनके विचारों का शब्द रूप हैं जो'आज के अतीत' में एक रचनाकार के बनने की प्रक्रिया के स्पष्टीकरण में सामने आते हैं। भीष्म साहनी लिखते हैं- 'मैं समझता हूं अपने से अलग साहित्य नाम की कोई चीज नहीं होती। जैसा मैं हूं वैसे ही मेरी रचनाएं रच पाउंगा। मेरे संस्कार, मेरे अनुभव, मेरा व्यक्तित्व, मेरी दृष्टि सभी मिलकर रचना की सृष्टि करते हैं। इनमें से एक भी झूठी हो तो सारी रचना झूठी पड़ जाती है।...लेखक का अपना सत्य जीवन के सत्य से निराला नहीं होता। न ही जीवन का सत्य और लेखक का सत्य दो अलग-अलग सत्य होते हैं। एक ही सत्य होता है और वह जीवन सत्य होता है। उसी को साहित्य वाणी देता है।'[2] इसी संदर्भ में कथाकार अमरकांत कहते हैं- "भीष्म जी की तरह रचनाकार होना बहुत कठिन है। वर्षों तक चुपचाप और लगातार परिश्रम करते रहने से ही उनका ऐसा प्रखर रचनाकार व्यक्तित्व उभर कर आया है।"[3]

भीष्म साहनी वामपंथी विचारधारा के प्रतिबद्ध लेखक थे पर विशिष्ट विचारधारा के साथ जुड़े होने के बावजूद सौजन्यता एवं मानवीय मूल्य को उन्होंने कभीआंखोंसे ओझल नहीं होने दिया। भीष्म साहनी अपनी बात को बड़ी स्पष्टता से बिना किसी उलझाव के प्रस्तुत करते थे। उनकी जीवन दृष्टि बहुत स्पष्ट और जीवन अनुभव का आधार लिए हुए थी, उनकी रचनाओं के माध्यम से इसे रेखांकित किया जा सकता है। उनका बल जीवन को सदैव एकाकी की अपेक्षा समग्रता में देखने पर रहा। "इंसानी रिश्तों का मात्र भावात्मक स्तर पर किया गया चित्रण अधूरा होता है, वह हमें गुमराह भी कर सकता है और समाज में यथास्थिति को बनाए रखने में मदद भी कर सकता है, जरूरत है जीवन को, जहांतक हो सके उसकी संपूर्णता में देखने की। इसके बिना यथार्थ का चित्रण या तो एकांगी या फिर असंतुलित बना रहेगा।"[4]

स्वतंत्र भारत की अवस्था को देख कर भीष्म साहनी लेखक के तौर पर ही नहीं बल्कि व्यक्तिगत तौर पर भी दुखी रहते थे। उनका मानना था कि आजादी से पहले के वातावरण में उद्वेलन था। समाज, राजनीति, अर्थव्यवस्था, विज्ञानके हर क्षेत्र में कुछ न कुछ जुड़ रहा था। वह दौर ऊँचे आदर्शों, कुर्बानी और आत्मोत्सर्ग की भावना से उद्वेलित था और समाज से कटकर साहित्य नहीं हो सकता बल्कि वह तो अपने समय काल

[1]डॉ वेदप्रकाश अमिताभ, हिंदी कहानी के 100 वर्ष, पृष्ठ 199

[2]भीष्म साहनी, अपनी बात, पृष्ठ 26-27

[3]भीष्म साहनी, छवि संग्रह ,महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, भाग 4, 2003

[4]राजेश्वर सक्सेना, ठाकुर, संपादित, भीष्म साहनी: व्यक्ति और रचना, वाणी प्रकाशन 1982, पृष्ठ 52

RRIJM 2015, All Rights Reserved

का निर्वैयक्तित बयान होता है।भीष्म साहनी लिखते हैं- "साहित्य देश कालातीत होता है, फिर भी उसकी जड़े देश काल में होती हैं। कोई भी लेखक अपने समय का उल्लंघन नहीं कर सकता, न वह उस परिवेश से मुक्त हो सकता है, जिसमें वह जीता और लिखता है।"[5] लेखक के लिए सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थितियों को जानना आवश्यक हैक्योंकि सामाजिक जीवन इन्हीं शक्तियों के दबावों से परिलक्षित होता है। अतः "आज की सामाजिक और आर्थिक स्थिति के प्रति सचेत रहते हुए लेखक जितना अधिक जनजीवन से जुड़ पाएगा, उस जीवन की धड़कन को महसूस कर पाएगा, उतनी ही उसकी रचनाओं में सार्थकता आएगी"[6]

किसी अन्य कलाकार की तरह आमतौर पर साहित्यकार भी अपने बचपन से जो कुछ देखता, सुनताऔर अनुभव करता है, उसका प्रतिबिंब उसके साहित्य में नज़र आता है।इसी कारण साहित्यकार को युग-चितेरामाना जाता है। साहित्यकार समाज को अनदेखा नहीं कर सकता, अगर वह ऐसा करता है तोना तो वह उस समाज के साथ न्याय कर पाएगा और ना ही उसका साहित्य सार्थक बन पड़ेगा। साहित्यकार के साहित्य से इस बात का पता चल जाता है कि उसका जीवन किस हालात में, किन परिस्थितियों से गुजरा है। पर यदि वह केवल इन्हीं बातों को अपने साहित्य में उतारे तो उसका साहित्य एकांगी माना जा सकता है। साहित्य युग सापेक्ष होता है उसमें युग की समस्याएं, धड़कन, आकांक्षाएं औरस्वप्न मूर्तता ग्रहण करते हैं। समाज का सबसे संवेदनशील अंग होने के कारण साहित्यकार अपने युग और परिवेश को गहनता से अनुभूत कर सार्थक स्वर प्रदान करता है। भीष्म साहनी ने माना कि "लेखक के लिए जीवन ही सर्वोपरि है और मनुष्य भी अकेला नहीं है। वह भी मानव समाज का अंग है। मनुष्य को उसके समाज के परिप्रेक्ष्य में देखना उसे अधिक स्पष्टता और पूर्णता से देखना है।इसी तरह लेखक जीवन की परतों को सामने खोलता है।"[7]

भीष्म साहनी जिस परिवेश में रहे उसका पूर्ण प्रभाव उनके लेखन पर दिखाई पड़ा। प्रेमचंद, यशपाल, मोहन राकेशजैसे साहित्यकारों का उन पर प्रभाव रहा। यही नहीं उनका व्यक्तित्व सच्चे अर्थों में मार्क्सवाद से प्रभावित रहा।उन्होंने समाज में विद्यमानस्त्री-पुरुषके मध्य असमानता को विभिन्न स्थितियों एवं सुझावों से भरने की सप्रयोजन वकालत की तथा अपनी रचनाओं में अन्याय के खिलाफ जाकर जमकर आवाज उठाई। भीष्म साहनी ने सिर्फ उपन्यास, कहानियां और नाटक ही नहीं लिखे बल्कि संस्मरण, निबंध, आत्मकथा, आलोचनात्मक लेखतथा बाल साहित्य आदि भी लिखे।

भीष्म साहनी कहीं भी विचारधारा को अपने साहित्य पर हावी नहीं होने देते, यह उनकी एक बड़ी उपलब्धि है। सांप्रदायिकता की पहूंच में स्त्री से लेकर निम्नतर स्तर पर जीवन यापन कर रहा व्यक्ति भी आ जाता है। केवल व्यक्ति के संस्कार नहीं, उस की सामाजिक स्थिति ही नहीं, अफवाहें और आंखों के सामने घट रही घटनाएं भी ऐसे में स्थापित जीवन मूल्यों से टकराते हैं। इन घटनाओं की कई परतें रहीं जिन्हें साहनी अपनी रचनाओं में दिखाते हैं। वे प्रमाणिक अनुभूतियों को इस तरह चित्रित करते हैं मानो वह कोई साहित्यिक कृति नहीं बल्कि दंगों का ऐतिहासिक दस्तावेज हो। विजेंद्र नारायण सिंह भीष्म साहनी के संबंध में कहते हैं - "भीष्म साहनी एक महत्वपूर्ण रचनाकार हैं और उनकी सतेज दृष्टि सांप्रदायिकता की तह तक पहुँचती है। वे इसके मूल की तलाश में उपनिवेशवादियों तक ही रुक नहीं जाते हैं। एक राजनेता और रचनाकार में फर्क होता है और यह फर्क यहां दिखाई पड़ता है। सांप्रदायिकता एक सामाजिक व्यवस्था के तहत रची गई मानसिकता से उत्पन्न होती है।"[8]विभाजन ने भीष्म साहनी की आत्मा को बुरी तरह लहूलुहान कर दिया था। यह ऐसी पीड़ा थी जिसे उन्होंने अपने शरीर और मन में झेला था। धर्म की आड़ में सांसारिक स्वार्थ और राजनीतिक उद्देश्य मनुष्य को भीतर से किस तरह बांट देते हैं, इसे लेकर वह जीवन भर ना केवल उद्विग्न रहे बल्कि उसके विरूद्ध अपनी लेखनी चलाकर संघर्ष भी करते रहे।

भीष्म साहनी एक सजग साहित्यकार हैं, जिनका कथा और नाट्य साहित्य समाज के पीड़ित वर्ग की व्यथा-कथा कहता हुआ, आडम्बरों, धर्मांधता, थोथी राजनीति और प्रत्येक प्रकार के शोषण का पर्दाफाश करता है। भीष्म साहनी बाह्य व्यक्तित्व से जैसे शांत, सौम्य, स्निग्ध दिखाई देते हैं ठीक उसी प्रकार वे अंदर से भी हैं लेकिन समाज में व्याप्त विसंगतियों, विषमताओं और विडंबनाओं को देख कर वे शांत नहीं बैठते। अंदर का भावबोध उन्हें झकझोरता है। अपने अनुभव के आधार पर साहित्य सृजन करने वाले प्रतिभा संपन्न भीष्म साहनी बचपन के साहित्यिक माहौल, आर्य समाजी संस्कार, नौकरी के अनुभव, बड़े भाई की कला की प्रेरणा आदि बातों से बहुत प्रभावित हुए। यशपाल, प्रेमचंद जैसे साहित्यकारों के साहित्य के प्रभाव, व्यापारी अनुभव आदि बातों से उनका अनुभव क्षेत्र समृद्ध हुआ जिसके फलस्वरूप साहित्य की विभिन्न विधाओं में साहित्य सृजन कर उन्होंने अपने आप को प्रगतिशील पीढ़ी का प्रतिनिधि बना दिया।

---

[5]भीष्म साहनी, अपनी बात, पृष्ठ 143

[6]भीष्म साहनी, कट्टरपंथी मनोवृति के खतरे, लेख, संपादक, नामवर सिंह, आलोचना 1976,पृष्ठ 28- 29

[7]राजेश्वर सक्सेना, प्रताप ठाकुर, भीष्म साहनी: व्यक्ति और रचना, पृष्ठ10

[8]विजेंद्र नारायण सिंह, उपनिवेशवाद और सांप्रदायिकता, आलोचना, अप्रैल-सितंबर 2004, पृष्ठ 67